सोलापुर। बिजनेस एण्ड सोशल विंग्स के स्नेह सम्मेलन का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए महापौरअल्का,राठोड,गंभीरेजी, कार्याध्यक्ष व्यापार एसोशिएसन, मा. कुमार करण , श्रेष्ठ समाज सेवक, ब्र.कु. गीता , शांतिवन, ब्र.कु. सोमप्रभा ।

फरीदाबाद। आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद ईश्वरीय स्मृति में इनेलो जिला अध्यक्ष, ब्र.कु. कौशल्या एवं अन्य।।

सातारा कपूर -कॉलनी। बी.ए. मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा के पी.सी.पी. सेन्टर के उद्घाटन समारोह में लोकमान्य विद्या मन्दिर के प्राचार्य काळे , डॉ. सुहास यादव नागठाणे, डी.जी. कॉलेज के प्राचार्य नलवडे , सामाजिक कार्यकर्त्ता इन्द्रजीत ढेंबरे और साथ में

पालम -सोलापुर। माजी उपमुख्यमंत्री गोपीनाथ राव मुंडे जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. चंद्रकला बहन.

तिलैया -कोडरमा। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् सत्यनारायण को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लक्ष्मा

वलसाड। कॉलेज के छात्रों के लिये आयोजित एन.सी.सी. कैम्प में मोटीवेशन और स्ट्रेस विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु. रोहित

अनोखे उद्यान के ....

पेज 2 का शेष...

ये आत्मायें मिलीं और भविष्य 21 जन्मों के लिए सतयुगी एवं त्रेतायुगी दैवी स्वराज्य का जन्मसिद्ध अधिकार तथा वर्त्तमान जीवन में 'बापदादा' से रूहानी स्नेह प्राप्त कर अतीन्द्रिय सुख के सागर में लहरा रही हैं। अविनाशी ज्ञान-रत्नों का अखुट खजाना प्राप्त कर रही हैं। बताइये ! पदमापदम भाग्यशालिनी हम आत्मायें अपने बाप-दादा के सन्मुख जाने पर क्या महसूस करती होगी ? ऐसे पिता को देखते ही रहने, ऐसे पिता के संग ही रहने का मन भला किसका न होता होगा ? ऐसे बागवान व माली के हाथों पालना लेने की इच्छा किसकी न होगी और ऐसे विश्व सेवक के साथ विश्व-परिवर्तन के सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय सेवा के कार्य में उनका सहयोगी बनने का मन किसका न होगा ? ऐसे पूज्य बनाने वाले अति मीठे, अति स्नेही करूणा के सागर बाप-दादा की हम बच्चों को कितनी याद आती होगी ?

500 करोड मनुष्यात्माओं में से वही आत्मायें धन्य हैं जिन्होंने दादा जी के साकार माध्यम (पिताश्री जी) द्वारा कल्प के बाद पुन: अवतरित हुए अपने पारलौकिक पिता परमात्मा शिव को जाना, पहचाना और उनके साथ सम्बन्ध जोडकर अपना ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं भी ऐसे पदमापदम भाग्यशाली आत्माओं में से एक आत्मा हैं जो पिताश्री जी के द्वारा शिव बाबा के साथ अपना कल्पपूर्व वाला सम्बन्ध जोडकर ईश्वरीय सुख प्राप्त कर सका। बाप-दादा को देखते ही मुझे इतनी खुशी, इतना अलौकिक सुख मिलता था कि वह अवर्णनीय है। केवल इतना ही कह सकता हूँ कि खुशी में रोमांच खडे हो जाते थे। उस समय मुझे बिल्कुल ही विचित्र अनुभव होता था, जिसकी आज मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकते। बाबा के पास जाने से ही, समीप बैठने से ही, पवित्रता से भरपूर अलौकिक वातावरण एवं नैनों से उनकी रूहानी किरणें हमें निहाल कर देती थीं और आत्मिक स्मृति, शान्ति और आनन्द स्वरूप की स्थिति में स्थित होने का हमें कोई पुरूषार्थ ही नहीं करना पडता था। क्योंकि 'बाबा' तो हैं ही शान्ति, शक्ति, आनन्द, पवित्रता और ज्ञान के सागर और उनके समीप जाने पर यही अनुभव होता था।

लेकिन कितने निरंहकारी थे बाबा ! हम बच्चों के रहने के लिये बाबा ने 'पाण्डव भवन' में नये-नये कई मकान बनवाये परन्तु स्वयं पुराने मकान में ही रहे। बाबा किसी को भी पाँव नहीं पडने देते थे और हम बच्चों को नमस्ते करते थे एवं कहते थे - '' शिव बाबा को तो पाँव नहीं है और फिर आप ही बच्चे तो स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। अतएव बाप आपको नमस्ते करते हैं। मैं तो सिर्फ ब्राह्माण्ड का ही मालिक हूँ।'' हम चैतन्य फूलों को सदैव मुस्कुराते हुए रखने के लिये बाबा क्लास में एवं पत्रों द्वारा जैसे सम्बोधित करते थे वैसे दुनिया में और कोई भी नहीं कर सकता। जैसे बाबा कहते थे –

''नूरे रत्न, ब्रह्मामुखवंशावली ब्रह्माकुलभूषण, पदमापदम भाग्य- शाली, स्वदर्शन चक्रधारी, वफादार फरमानबरदार, नम्बरवार, पुरूषार्थ अनुसार मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रित, साहबजादों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। भविष्य में बनने वाले शहजादों व रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते ...।'' ओहो ! यह सुनकर व पढकर हम बच्चों को कितना नशा चढ जाता था !विचित्र बाप की हर बात सारी दुनिया से न्यारी और प्यारी लगती थी और अभी भी जब अव्यक्त रूप से बाप-दादा से मुलाकात होती है तो भी उनकी हर बात न्यारी और प्यारी लगती है।

अब तो हर बात में निराकारी, निरंहकारी, न्यारे और प्यारे बनकर सारी सृष्टि को पावन बनाने के ईश्वरीय कार्य में पिताश्री जी के समान शिव बाबा की श्रीमत पर तन, मन एवं धन से सहयोगी बनकर अपने भविष्य का सौभाग्य बनाने में ही कल्याण है। समय को पहचानना और समय अनुसार ही शिव बाबा की आज्ञाओं का पूरा-पूरा पालन करने में ही स्वयं अपना और जगत का कल्याण है और विश्व हितकारी कल्याणकारी बच्चे ही बाप-दादा को अति प्रिय लगते हैं।

मन के प्रश्नों का समाधान ज्ञान से होता है

वह मनुष्य ज्ञानवान और कृतार्थ हो जाता है अर्थात् संतुष्ट हो जाता है। जितना हम ज्ञान की धारणा करते जाते हैं, उतना हमारे मन के प्रश्नों का समाधान होता जाता है। उतना ही मन संतुष्ट और प्रसन्न हो जाता है। संतुष्टता का ये भाव नहीं है कि बस अब हमें कुछ जानने की जरूरत नहीं। ये संतुष्टता की स्थिति नहीं है। लेकिन संतुष्टता की स्थिति अर्थात् जैसे व्यक्ति पैदल चल रहा है अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए, उसको बहुत प्यास लगी है, उसने पानी पिया जैसे ही पानी मिला वह तृप्त हो गया। लेकिन तृप्त होकर वह वहाँ बैठ नहीं जाता है बल्कि अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हो जाता है।

ठीक इसी तरह पुरुषार्थी जब पुरुषार्थ करता है तो पुरुषार्थ करने के साथ ही, जब-जब बीच में संशय उत्पन्न करने वाले प्रश्न उठते हैं और जब उनका समाधान हो जाता है तो आत्मा, संतुष्टता, प्रसन्नता की स्थिति का अनुभव करती है फिर पुरुषार्थ की ओर आगे अग्रसर हो जाते हैं। इसको कहते हैं आत्म-तृप्ति की अवस्था। पुरुषार्थी कभी भी आलस्य में नहीं आता और नित्य प्रगति की ओर आगे बढ़ता जाता है। योगाभ्यास:-

जैसे-जैसे मैं आपको विचार देती जाऊं आप अपने मन के अंदर उन

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

विचारों का निर्माण करते जायेंगे। इतना ही नहीं लेकिन उन विचारों के निर्माण के साथ-साथ उन भावनाओं को भी अंदर में उत्पन्न करते चलें। जितना हम भावनाओं को उत्पन्न करते चलेंगे, उतना महसूस करना सहज व स्वाभाविक हो जायेगा। जैसे परमात्मा ने अर्जुन को कहा कि अनन्य भाव से तुम अपने मन को मेरे में लगाओ तो उसी प्रकार हम भी अपने मन को परमात्मा में लगायें और अपने मन के अंदर शुभ संकल्पों का निर्माण करें।

अंतर्चक्षु से... स्वयं को अपने दिव्य स्वरूप में... भृकुटी के अकालतख्त पर... विराजमान देखते हैं... स्वयं को... आत्म स्थिति में... स्थित कर रहे हैं.. ये शरीर... मेरा साधन है... क्षेत्र है... कर्म करने का... मैं आत्मा क्षेत्रज्ञ हूँ... धीरे-धीरे... अपने मन और बुद्धि को... इस देह के भान से उपराम... करते जाते हैं... और स्वयं को... ले चलते हैं... यात्रा पर... परमधाम की ओर... शांतिधाम की ओर... जहाँ सूर्य, चंद्र, तारागणों का प्रकाश पहुंच नहीं सकता... पंच महातत्व की दुनिया से दूर... दिव्य लोक में... ब्रह्ममहतत्व... परमात्मा के सानिध्य में... इस दिव्य लोक में... मैं आत्मा स्वयं को मुक्त अवस्था में महसूस कर रही हूँ... कोई बंधन, कोई बोझ नहीं है... मैं स्वयं को... एकदम हल्के स्वरूप में... देख रही हूँ... चारों ओर... पवित्रता की... दिव्य आभा फैली हुई है... मैं आत्मा... अपने असली स्वरूप में... शुद्ध सतोप्रधान... ये मेरा पवित्र स्वरूप है... असली स्वरूप है... सत्य गुण... ये मेरी वास्तविकता है... यही मेरे असली संस्कार हैं... इस संस्कार में स्थित... मैं स्वयं को.... इतना न्यारे और प्यारे ... स्वरूप में... अलौकिक स्वरूप में देख रही हूँ... धीरे-धीरे मैं स्वयं को पिता... परमात्मा के सानिध्य में देख रही हूँ... जैसे मैं आत्मा दिव्य प्रकाशपुंज हूँ... वैसे मेरे पिता परमात्मा भी... सूर्य के समान प्रकाशमान हैं... परंतु चंद्रमा के समान... शीतल स्वरूप है... अग्नि के समान... तेजोमय है... सर्व शक्तिमान... सर्वोच्च... त्रिलोकीनाथ है... मनुष्य संसार के... सृष्टि रूपी वृक्ष के... बीज रूप हैं... निराकार हैं... सूक्ष्म ते सूक्ष्म... अति सूक्ष्म... सर्व शक्तिमान हैं... परमात्मा के सानिध्य में... परमात्मा की अनंत किरणें... मेरे ऊपर... प्रवाहित हो रही है... असीम स्नेह का सागर है... ज्ञान का सागर है... मुझ आत्मा को भी... ज्ञान के प्रकाश से... प्रकाशित कर दिया... दिव्य बुद्धि का वरदान दे रहे हैं... जिससे मैं... गुह्य गोपनीय... ज्ञान को समझने की... क्षमता धारण कर रही हूँ... परमात्मा पिता से... निर्मल... शक्तियों के प्रवाह से... मुझ आत्मा के... जन्म-जन्मांतर के विकर्म... दग्ध हो गये... और मैं भी... निर्मल पवित्र बनती जा रही हूँ... परमात्मा के असीम प्यार को... प्राप्त करने की पात्रता... स्वयं में धारण कर रही हूँ... जिससे अनंत किरणों की बाँहों में मुझे समाते जा रहे हैं... (गीत :- झिलमिल सितारे बनकर उड़कर वतन में जायें) परमात्म मिलन का अनुभव करते हुए... मैं धीरे-धीरे... अपने मन और बुद्धि को... वापिस... इस पंचतत्व की दुनिया की ओर... शरीर में... भ्रकुटी के अकाल तख्त पर विराजमान होती हूँ... और अब सतो गुणों को... नित्य... हर कर्म में प्रवाहित करना है.... ओम शांति... शांति... शांति... शांति...।

- क्रमश: